उपसंहार

उपसंहार

मानववादी साहित्यकार आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी बीसवीं सदी के विशिष्ट हस्ताक्षर हैं| उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से मानव समाज को उच्च कोटि में लाने का भरसक प्रयत्न किया| अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए वर्तमान समाज की विसंगतियों को उन्होंने अपनी रचनाओं का विषय बनाया|

आचार्य द्विवेदी साहित्य के मूल में मनुष्य को सर्वोपरी मानते हैं| उनके अनुसार मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है| साहित्य को, मनुष्य की दृष्टि से देखने के कारण द्विवेदी ने चिंतन, मनन और अध्ययन का लक्ष्य मनुष्य को ही स्वीकार किया| साहित्य ही मनुष्य को भीतर से सुसंस्कृत और उन्नत बनाता है| समाज को 'विकृत' से 'सुन्दर' की ओर ले जाने का कार्य द्विवेदी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से की है| हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के साहित्य का अध्ययन करने से पता चलता है कि उन्होंने मानव के लिए लिखा है, मानव की शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक प्रगति ही उनका लक्ष्य है| मनुष्य को पशुत्व से अलग करते हुए, उनमें नैतिक मूल्यों का विकास करना वे चाहते हैं| इस दृष्टि से उनकी रचनाएँ बिलकुल प्रासंगिक है|

डा. द्विवेदी की रचनाओं में विभिन्नता है| जैसे कोई विशाल वृक्ष गहरी धरती से अपना जीवन रस ले रहा हो, और ऊपर आकाश में फैलता बढ़ता जा रहा हो, स्वच्छ धूप और हवा को ग्रहण करता चल रहा हो| जैसे उनकी अनेक प्रशाखाये होती है - बड़ी-बड़ी, मोटी-मोटी, फिर भी तना एक ही होता है| वैसे ही द्विवेदी के साहित्य की विभिन्न विधाएँ जितनी भी हो, सबका मूल उत्स एक ही है| वे इतिहास और प्राचीन भारतीय संस्कृति के पाताल से रस-ग्रहण करनेवाले थे तथा हर क्षण नये युग के बहनेवाली हवा में साँस लेते थे| वे संघर्षों की धूप और वर्षा को भी निरंतर सहते रहते थे| फलतः उनका साहित्य जैसे की बताया जाता है, हरे-भरे पत्तोंवाला,

पुष्ट फूल-फलोंवाला और छायादार है| उनका संपूर्ण वाडमय उनके मानववादी और लोक विधायिनी दृष्टि से भास्वर है| उनकी प्रतिभा की विशदता अतीत, वर्तमान एवं भविष्य के लिए है|

सृष्टि के आरंभ से ही इतिहास और संस्कृति का अटूट संबंध है| मानव जीवन जैसे विकास पथ पर चल रहा है, वैसे ही इतिहास की कहानी अपने में समाविष्ट करने का प्रयास किया है| जहाँ अतीत एवं वर्तमान के साथ-साथ मानवीय मूल्यों को लेकर संस्कृति का निर्माण होता है, वहाँ इतिहास अपने पंखों में इन सभी को समेट लेता है| इतिहास में भविष्य की ओर संकेत भी है| उन्होंने अपने उपन्यास तथा निबंधों में भारतीय संस्कृति के उच्च मूल्यों की स्थापना की है और साथ ही साथ अतीत की गहराई में जाकर, देश की प्रगति की ओर संकेत किया है| प्राचीन काल से लेकर भारतीय संस्कृति विश्व की श्रेष्ठ संस्कृतियों में एक है| भारतीय संस्कृति, मनुष्य को भौतिकता से ऊँचा उठाकर, आध्यात्मिकता तक पहूँचाने में सक्षम है| इसके तत्व मानवीयता को जगाने लायक है| भारतीय संस्कृति के तत्व इस प्रकार के हैं कि मनुष्य को देवता बनाने की शक्ति इसमें है| प्रकृति-प्रेम, देश-प्रेम, वर्णाश्रम व्यवस्था, प्रेम भावना, धार्मिक सहिष्णुता, मानवता, करुणा, भाईचारा, विनय, गुरु-शिष्य संबंध, अतिथि मर्यादा, विश्वबंधुत्व, समन्वयात्मकता आदि भारतीय संस्कृति की विशिष्टता है|

प्रत्येक रचनाकार, अपनी रचनाओं में साँस्कृतिक तत्वों को जोड़ने का प्रयत्न करता है| इस प्रकार करते समय अनजाने ही घटना, काल, वातावरण, ऐतिहासिक एवं काल्पनिक पात्र, देश प्रेम आदि तत्व उसमें आ जाता है| इसप्रकार वह इतिहास का रूप धारण कर लेता है| आचार्य की रचनायें भी इस प्रकार का है|

'बाणभट्ट की आत्मकथा' में बाण भट्ट का चरित्र अपनी कुछ विशेषताओं के कारण देवता के स्तर पर पहुँच जाता है| इस उपन्यास में हर्षकालीन समाज का चित्रण देखा जा सकता है| बाण भट्ट, हर्षवर्धन के दरबारी कवि थे| द्विवेदी ने कुछ ऐतिहासिक तथ्यों को लेकर, कल्पना के सहारे प्रस्तुत उपन्यास की सृष्टि की है| तत्कालीन राजनैतिक तथा सामाजिक वातावरण का चित्रण उन्होंने प्रसंगानुकुल किया है| सुचरिता, उपन्यास का ऐसा पात्र है, जिसका विवाह बाल्यावस्था में हो चूका था, उसे मालूम भी नहीं था कि विवाह क्या चीज़ है| निपुणिका, विधवा जीवन की कहानी है| समाज को जागृत करना, जनता को प्रबोधित करना जैसे महान उद्देश्य से ही रचनाकार ने इसकी रचना की है| 'देश रक्षा सबका सामान धर्म है' महामाया का यह कथन यह पूरे समाज के लिए द्विवेदी का सन्देश है| उपन्यास की नायिका भट्टिनी भारतीय आदर्श नारी का प्रतिक है| 'बाणभट्ट की आत्मकथा' अतीत पर आधारित होते हुए भी वर्तमान समाज के विकट समस्याओं का समाधान भी इसमें देखा जा सकता है| मिथकीय पात्रों के माध्यम से उन्होंने प्रस्तुत रचना का सृजन किया है और कई संदर्भों में मिथकीय विश्वासों को लेकर इसके पात्र आगे चलते हैं|

'चारुचन्द्रलेख' द्विवेदी का दूसरा उपन्यास है, जो पाण्डित्यपूर्ण शैली में लिखा गया है| इस उपन्यास में मध्यकालीन समाज का चित्र स्पष्ट रूप में दिखाई देता है| तांत्रिक साधनाओं पर लिखा गया पहला उपन्यास है यह| मध्यकालीन समाज की अस्तव्यस्तता पर प्रकाश डालते हुए लेखक वर्तमान समाज से जागरूक बनने का आदेश भी प्रस्तुत रचना के द्वारा देता है| इसका पात्र राजा सातवाहन और रानी चंद्रलेखा देशप्रेम का प्रतीक है| गोरक्षनाथ ऐसा एक पात्र है जो दीनों की रक्षा के लिए हमेशा तैयार है| योगियों तथा साधू-संतों पर वे गहरी हँसी उठाते है और उनका कहना है कि काषाय वस्त्र में छिपी हुई कपटता का सभी लोग पहचानना है|

जो लोग दीन-दुखियों की सहायता करता है उसी की रक्षा होती है| दीन-दुखियों के प्रति मानवता का भाव, अहिंसा की प्रेरणा, देश भक्ति, समाज-मंगल आदि प्रस्तुत उपन्यास का उद्देश्य है| नारी को द्विवेदी साहस, आत्मगौरव, देशप्रेम, निडरता आदि गुणों से युक्त बताते हैं| नारी-उद्धार भी उनका लक्ष्य मालूम होता है| कल्पना तथा मिथकों की सृष्टि प्रस्तुत उपन्यास की रोचकता को बढ़ाता है|

द्विवेदी की तृतीय उपन्यास 'पुनर्नवा' गुप्तकालीन समाज से संबंधित है| यह प्राचीन भारतीय संस्कृति पर लिखा गया है| इसका केन्द्र हलद्विप, और उज्जयिनी है| देश को विदेशी आक्रुमन से मुक्त कराने की प्रेरणा प्रस्तुत उपन्यास का लक्ष्य है| प्रस्तुत उपन्यास के द्वारा द्विवेदी कहना चाहते है कि ईश्वर की उपासना के साथ ही साथ मानवता की उपासना भी मनुष्य के लिए अनिवार्य है| देवरात, देश का उद्धार चाहनेवाला है| उच्च आदर्शों को ज़ोर से पकड़ते हुए वह आगे बढ़ता है| मानवीय जीवन की पुनार्वाख्या के भाव को लेकर ही 'पुनर्नवा' का सृजन हुआ है|

द्विवेदी का अंतिम उपन्यास 'अनामदास का पोथा' छान्दोग्य उपनिषद तथा बृहदारण्यक उपनिषद् कालीन वातावरण से प्रभावित है| प्रस्तुत उपन्यास में मिथक कथा के माध्यम से द्विवेदी व्यक्त करना चाहते हैं कि यदि तपस्वी, नारी के संसर्ग में आ जाता है तो उसकी स्थिति विचित्र प्रकार की होती है, यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है| रैक्व की वैश्वानर उपासना समाज मंगल को लक्ष्य करके किया जाता है| सत्य के लिए ज्ञान की, और ज्ञान के लिए कर्म की आवश्यकता है, यही प्रमुख सन्देश उपन्यास के द्वारा उपन्यासकार देते हैं| समाज के दीन-दुखियों को पहचानकर उनकी सेवा करना ही सच्ची तपस्या है|

आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के कथा साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन से पता चलता है कि उनका कथा साहित्य इतिहास, संस्कृति एवं मिथक के प्रमुख

तत्वों पर आधारित है| 'बाणभट्ट की आत्मकथा' घटना, देशकाल एवं, लोकजीवन आदि तत्वों से संपूर्ण है| साथ ही साथ धर्म, वर्ण, संस्कार, कल्पना, जिज्ञासावृति आदि तत्व भी इसमें शामिल है| 'चारुचन्द्रलेख' और 'पुनर्नवा' में भी ये तत्व विद्यमान है| 'अनामदास का पोथा' में दार्शनिकता का बोझ अधिक है| इतिहास, धर्म, दर्शन आध्यात्मिकता, मानव जीवन की पुनर्व्याख्या का भाव आदि उनके इस उपन्यास में प्रत्यक्ष रूप में पाई जाती है| द्विवेदी के उपन्यासों को गहराई से देखने पर पता चलता है कि इतिहास, संस्कृति एवं मिथक के तत्वों का इसमें प्रयोग हुआ है और इसलिए उनकी जो 'मानववाद' की आकांक्षा एवं उद्देश्य है वह सफल निकले हैं|

आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने सौ से अधिक निबंधों का सृजन किया है| अशोक के फूल, कुटज, कल्पलता, आलोकपर्व, विचारप्रवाह, सभ्यता और संस्कृति, विचार और वितर्क आदि उनके प्रमुख निबंध संग्रह है| इनमें से हर निबंध को विस्तारपूर्वक पढ़कर, उनमें भी संस्कृति, इतिहास और मिथक को ढूँढने का प्रयास मैं ने की है| देवदारु, अशोक के फूल, कुटज. हिमालय, सभ्यता और संस्कृति, भारतीय संस्कृति की देव, आदि प्राचीन तथा नवीन भारतीय संस्कृति को व्यक्त करनेलायक निबंध है तो घर जोड़ने की माया, प्रायश्चित की घड़ी आदि निबंध में मिथकों का समावेश करते हुए द्विवेदी अपने दार्शनिक दृष्टिकोण को व्यक्त करता हैं| वसंत आ गया, 'जीवेन शरत् शतम', 'दीपावली-सामाजिक मंगलेच्छा का प्रतिमा-पर्व', 'आम फिर बैरा गए', 'प्राचीन भारत में मदनोत्सव' आदि निबंधों में उत्सव प्रियता का स्पष्ट रूप दिखाई देता है जो भारतीय संस्कृति में पाई जाती है| अपने ज्योतिर्विज्ञान को व्यक्त करनेवाली कुछ रचनाएँ भी उन्होंने की है जैसे 'भारतीय फलित ज्योतिष'| उनके सारे के सारे निबंधों में संस्कृति, इतिहास तथा मिथकों के तत्व प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में देखा जा सकता है| 'भीष्म को क्षमा ही किया गया निबंध में भीष्म, समाज के इस प्रकार के साहित्यकारों का प्रतीक है जो अन्याय से मूँह मोड़ता है|

'मेरी जन्मभूमि' नामक निबंध में द्विवेदी ने 'ओझाव्लिया' नामक अपने जांव के रीति-रिवाज़, खान-पान, भाषा आदि के चित्रण से यहाँ के सांस्कृतिक महत्व का उद्घाटन किया है| इसमें निबंधकार यह स्थापित करने का प्रयास भी करते हैं कि सबकुछ में मनुष्य ही महत्वपूर्ण है, शेष सभी कुछ उसकी कल्याण की कामना से, उसके उत्थान के प्रयास में साधन बनकर प्रयुक्त होता है| 'भारतीय मेले' में यह दिखाया गया है कि भारतीय संस्कृति अनेक विश्वासों का समन्वित रूप है| 'आम फिर बौरा गए' में बिछु के माध्यम से भारतीय संस्कृति की महत्ता पर वे प्रकाश डालते हैं| आदिम सृष्टि के समय बिछु जैसा था, आज भी वैसा है| उसी तरह भारतीय संस्कृति भी अपरिवर्तनशील है| ज़माना बीत गया, फिर भी हमारी संस्कृति पर कोई दरार नहीं पड़ा है| 'आत्मदान का संदेशवाहक वसंत' में हम देखते हैं कि वसंत का काल समस्त चराचर को उन्मथित करके, समूची धरती को पुष्पाभरण बनाकर, और मनुष्य के चित्त में कोमल वृत्तियों को जागरित करके, यही सन्देश ले आता है कि सार्थकता आत्मदान में है| अपने आपको निछावर करने में ही परमानंद की प्राप्ति होती है| युद्ध और प्रतिहिंसा का भाव क्षणिक है|इसमें दार्शनिकता का स्पष्ट छाप दिखाई देता है| 'आन्तरिक शुचिता भी आवश्यक है' द्विवेदी की मानववादी दृष्टिकोण को व्यक्त करनेलायक निबंध है| इसमें वे कहते हैं कि विवेक, उदारता, समता, संवेदनाशील, आत्मसम्मान, श्रद्धा जैसे मानवीय गुणों का विकास नहीं हो सकता तो मनुष्य पशु से भिन्न नहीं है| 'सावधानी की आवश्यकता' में भी वे व्यक्त करते हैं कि हमें अपने संकीर्ण स्वार्थों से ऊपर उठकर मनुष्य मात्र के कल्याण का पथ निर्मित करना है| 'सभ्यता और संस्कृती', भारतीय संस्कृति की देन', 'भारतीय संस्कृति का स्वरूप' आदि निबंधों से भारतीय संस्कृति की समन्वयात्मकता का स्पष्ट छाप दिखाई देता है| द्विवेदी, वैराग्य और अभ्यास को संस्कृति का सर्वस्व मानते है| 'वन्देमातरम' में देश भक्ति का तत्व सर्वत्र विद्यमान है|

इसमें द्विवेदी का यह कथन 'यह भारतमाता कमज़ोर नहीं है, जो कोटि-कोटि वीर संतानों की माँ हो, उसे अबला नहीं समझना चाहिए| वह निश्चित रूप से बल्धारिणी है", भारतमाता के प्रति आदर को व्यक्त करते हैं| निरंतर असुर वृत्तियों से कदने का आह्वान इसमें हैं|

स्वास्थ्य और सुसंगठित परिवार से ही समूचा राष्ट्र उन्नत और शक्तिशाली बनता है| देश और समाज की उत्तमता और शक्ति के मूल में स्त्रियों का धर्म सम्मत आचरण है| उसके अभाव में अभाव में समाज और राष्ट्र जर्जर हो जाता है| 'धार्मिक एवं सच्चरित्र नारी, कुटुंब की शोभा है' नामक अपने निबंध में द्विवेदी का यह कथन, हमारे समाज में स्त्री के महत्व को व्यक्त करने लायक है| 'समस्त विश्व के सुख-दुःख के साथ, अपने सुख-दुःख की अनुभूति को मिला देना ही परम धर्म है, यही द्विवेदी का दृष्टिकोण है| द्विवेदी के 'तत्ःकिम' नामक निबंध दार्शनिकता के धरातल पर लिखी गई रचना है| इसमें अपने मिथकीय संकल्पों को व्यक्त करते हुए वे कहते हैं कि वासनाओं और कामनाओं से लिप्त रहकर, निर्विकार को पाना असंभव है| प्रकार मनुष्य, पुराने वस्त्र को छोड़कर, नया वस्त्र धारण करता है, उसी प्रकार आत्मा, जीर्ण को परित्याग कर नए शरीर को धारण करता है| 'भारत में ध्रुतक्रीडा' में वर्तमान समाज के कूटनीतिज्ञों के प्रतीक के रूप में शकुनी को चित्रित किया है| 'वसंत आ गया' में निबंधकार जीवन की वास्तविकता को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि पतझड़ और वसंत मनुष्य को यह अत सिखाता है कि मनुष्य जीवन में समय एक-सा नहीं रहता है| कभी पतझड़ की भाँती सबकुछ नष्ट हो जाता है, कभी ख़ुशी से मन वसंत हो जाता है| 'सर्वे पुंसां परोधर्म' में लेखक का उस सहस्य के प्रति जिज्ञासा भाव व्यक्त होते हैं जिससे हमें परमानंद की प्राप्ति होती है| वे पूछ उठते हैं कि वह क्या वस्तु है, जिसे पाने के लिए सब पाया हुआ मनुष्य भी छटपटा उठता है?

'हिन्दू संस्कृति के अध्ययन के उपादान' में जो देवासुर युद्ध की बात बताई गई है वह वास्तव में वर्तमान समाज की लड़ाई ही सिद्ध होता है| भाई चारे को भूलकर समाज में जो लड़ाई एवं मार-पीट हो रहा है इसको प्रतीकात्मक रूप में द्विवेदी प्रस्तुत निबंध के द्वारा व्यक्त करते हैं| 'भीष्म को क्षमा नहीं किया गया' में लेखक बताते हैं कि पुराण के प्रमुख पात्र भीष्म को अवतार के रूप में स्वीकार नहीं करते हैं, इसका कारण तो यह है कि कोराव सभा में द्रौपदी का अपमान वह चुप होकर देखते रहे| वर्तमान समाज के अत्याचारों को देखकर चुप रहनेवाले साहित्यकार के प्रतीक के रूप में यहाँ भीष्म पितामह को चित्रित किया है| द्विवेदी यह चेतावनी देते है कि जिस प्रकार भीष्म को अभी तक क्षमा नहीं दिया गया है, उसी तरह मौनी साहित्यकारों को कभी भी समाज क्षमा नहीं दिया जाएगा|

आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी की कहानियाँ बहुत छोटी है| कोई भी आलोचक द्विवेदी की कहानियाँ पर विचार नहीं किया है| उनकी कहानियों को बार-बार पढने से मालूम हुआ कि दो-तीन पात्रों के माध्यम से हर कहानियों में उन्होंने बहुत बड़े आदर्शो को हमारे सामने रखा है| उनका उद्देश्य महान है| 'धनवर्षण' नामक कहानी में एक ब्राह्मण के माध्यम से वर्तमान समाज की धन लोलुपता का चित्रण उन्होंने किया है| गुरु-शिष्य संबंध की पवित्रता, जो भारतीय संस्कृति का मुख्य तत्व है, इसका चित्रण भी इसमें हुआ है| 'मन्त्र-तन्त्र' में कहानीकार ने वर्तमान शासक वर्ग की ओर इशारा किया है| 'व्यवसाय बुद्धि' का सन्देश तो यह है कि जाति, कुल या देश विद्या आदि सभी से ऊँचा है मानव का चरित्र| द्विवेदी का मानवतावादी दृष्टिकोण प्रस्तुत कहानी में झलक उठता है| 'देवता की मनौती' में मिथकों के माध्यम से द्विवेदी अहिंसा का सन्देश हमें देते हैं| इसमें काशी पर्व का वर्णन, देवी-देवताओं की पूजा आदि का चित्रण हुआ है जो हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है| 'अछूत' कहानी में भारतीय समाज की छुआछूत

की समस्या पर लेखक ने प्रकाश डाला है| नारी की दयनीयता पर खेद प्रकट करे हुए वे नारी उद्धार की प्रेरणा भी प्रस्तुत कहानी के द्वारा देते हैं| प्रतिशोध' कहानी में कर्मफल की सार्थकता का चित्रण है| इस कहानी का सन्यासी बीच-बीच में कहता है कि मानव जैसा बोता है, वैसा ही फसल काटता है| द्विवेदी कहते हैं कि परोपकार, करुणा, भाई-चारा, अहिंसा, अपनी गलती पर पछताने का मन आदि गुण मनुष्य को देवता बनाता है|

प्रस्तुत शोध निबंध में आलोचक द्विवेदी का रूप संक्षेप में दिखाया है| उनकी 'कबीर', 'सूर-साहित्य', 'हिन्दी साहित्य की भूमिका', 'हिन्दी साहित्य का आदिकाल', 'नाथ संप्रदाय', 'साहित्य का मर्मा', 'कालीदास की लालित्य योजना' आदि पर प्रकाश डाला है, जिससे द्विवेदी का सफल रचनाकार सामने आता है|

आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी की कविताओं पर भी कोई भी आलोचक अभी तक अध्ययन नहीं किया है| उनकी कविताओं में विषय की विविधता है| 'सफलता के प्रति' नामक कविता का विषय प्रेम है तो दूसरी एक कविता में वे संसार के प्रति उपनी आशंका को प्रकट करते हुए दिखाई देता है| 'देशप्रेम' को व्यक्त करने लायक कविताओं का सृजन भी उन्होंने किया है| 'मेरा स्वप्न' नामक कविता, उनके प्रकृतिप्रेम को व्यक्त करने लायक है| भारतीय संस्कृति को उजागर करने लायक तत्व उनकी कविताओं में भी पाई जाती है|

द्विवेदी की रचनाओं का अध्ययन करने से मालूम हुआ कि उनकी भाषा-शैली अन्य रचनाकारों से बिलकुल भिन्न है| उनकी भाषा किसी युग-विशेष के ढाँचे में नहीं बंधती| उसका स्वरूप प्रत्येक विधा की प्रत्येक रचना में बदलता रहता है|

द्विवेदी की भाषा सर्वत्र प्रवाहमान है| आचार्य द्विवेदी की रचनाओं को गहराई से अध्ययन करते समय हमें ज्ञात होता है कि उनकी, भाषा पर पूर्ण अधिकार

है| ईश्वर प्रदन्त भाषा को उन्होंने मानवीय धरातल खड़ा करते हुए, अलंकृत करके बहुत मनमोहक बना दिया है| उनकी शैली भी गंभीर है| वैविध्यापूर्ण भाषा एवं शैली का प्रयोग उनकी रचनाओं को दूसरी रचनाकारों से अलग कर देता है|

आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी मानवतावादी रचनाकार है| वे मानव को सर्वोपरि मानते हैं| उनके अनुसार साहित्य, मनुष्य को पशुतव से ऊपर उठाकर, उनेहं देवतव प्रदान करनेलायक होना चाहिए| वे त्रिकाल के रचयिता है| उनका चिंतन एवं विचार अतीत, वर्तामन एवं भविष्य केलिए सिद्ध होता हैं| सदियों से भारतीय अनअस्थाव य संस्कृतियों के अधीन रहा हैं| अंग्रेज़ों के शासनकाल के बाद, जब हमें स्वतन्ट्रता प्राप्त हुई तब भी हमें इस अधीनता से मुक्ति नहीं मिली| अब हम पाश्चात्य सभ्यता के चंगुल में फसकर, मानसिक रूप से उसके अधीन में हैं| इससे मुक्त कराने तथा हमारी संस्कृति को ज़ोर से पकड़कर आगे बढ़ाने का आह्वान द्विवेदी उपनी रचनावोम के माध्यम से देते हैं|

द्विवेदी का समाजसुधारक रूप भी उनकी रचनाओं में देखने को मिलता है| पुराने समय से लेकर, भारतीय नारी परित्याक्ता थी| आज भी उसकी स्थिति वैसा ही है| लेकिन द्विवेदी का 'भट्ट' स्त्री को देवमन्दिर माननेवाला है| यहां वास्तव में 'भट्ट' स्वयं द्विवेदी ही है| उनका नारी पात्र शिक्षित एवं कर्मनिरत है| समाज में प्रचलित जाति-प्रथा, छुआछूत, अंधविश्वास आदि का खंडन करके, 'समभाव' का नारा लगाते हुए उन्होंने अपने पात्रों का सृजन किया है| द्विवेदी की विपुल रचना-

सामर्थ्य का रहस्य, उनके विशद शास्त्रीय ज्ञान में नहीं, बल्कि उस पारदर्शी जीवनदृष्टि में निहित है, जो युग का नहीं, युग-युग का सत्य देखती है| उनकी प्रतिभा ने इतिहास का उपयोग 'तीसरी आँख' के रूप में किया है और अतीतकालीन चेतना प्रवाह को वर्तामन जीवनधारा से जोड़ पाने में वे सफल निकले है| ऐतिहासिक घटनाओं को सांस्कृतिक परिवेश देकर,मिथकों के प्रयोग से उन्होंने अपनी रचनाओं को उतकृष्ट एवं कालजयी बना दिया|

.....ꕥ.....